हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिम जीवन का यथार्थ
(सन् 1947 से अब तक)

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी),
दयालबाग़, आगरा के अन्तर्गत पीएच.डी. (हिन्दी)
उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध की
रूपरेखा
सन् 2019

शोध निर्देशक **शोधार्थी**

डॉ. दयाल प्यारी सिन्हा **तृप्ति त्रिपाठी**
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय
डी.ई.आई.

विभागाध्यक्ष **कला संकाय प्रमुख**
प्रो. शर्मिला सक्सेना **प्रो. जे. के. वर्मा**
हिन्दी विभाग, कला संकाय,
डी.ई.आई.

हिन्दी विभाग, कला संकाय,
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा – 282005

हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिम जीवन का यथार्थ

(सन् 1947 से अब तक)

साहित्य वह है जो जीवन के विभिन्न कोणों को स्वयं में समाहित करने की सामर्थ्य रखता है। समाज के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मानव अधिक बुद्धिमान तथा संवेदनशील प्राणी है। अतः साहित्य का विषय क्षेत्र भी मानव के इर्द–गिर्द ही घूमता है। साहित्य और मानव का सम्बन्ध सदियों से चला आ रहा है। साहित्य की रचना मानव द्वारा की जाती है जो कि जन सामान्य का एक लोक विशेष, संस्कृति, जीवन यथार्थ से साक्षात्कार कराता है। साहित्य किसी देशकाल परिस्थिति की सीमा में बँधा नहीं होता अपितु अपने भूभाग से कहीं विस्तार में जाकर अपनी जड़ों को गहरे किये हुये है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात साहित्य के सन्दर्भ में यह है कि साहित्य को जाति विशेष, समुदाय विशेष, धर्म विशेष के लिये कहना उसके साथ न्याय करना न होगा क्योंकि साहित्य मानव और मानवीयता को देखने का पक्षपाती है न कि किसी धर्म विशेष या जाति विशेष की वकालत करने का। प्रत्येक मानव के जीवन का यथार्थ एक–दूसरे से भिन्न होता है और रचनाकार का लक्ष्य अपने साहित्य सृजन द्वारा मानव जीवन यथार्थ का सम्पूर्ण वर्णन कर उसकी समस्याओं को प्रस्तुत करने का होता है। यदि साहित्यकार यह सोचे कि कल्पना के सहारे साहित्य का सृजन कर सकता है तो वास्तव में वह उत्कृष्ट साहित्य नहीं कहा जा सकेगा। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी कहा है, ''मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने से पक्षपाती हूँ।'' साहित्य मानव जीवन का ही वर्णन प्रस्तुत करता है। मानव का यदि किसी धर्म, जाति वर्ग सम्प्रदाय के आधार पर विभाजन कर दिया गया है तो स्वाभाविक है कि इस मानव समुदाय की विशिष्टता, उसके जीवन के विभिन्न पहलुओं, समस्याओं, आशाओं, आकांक्षाओं, भविष्य के सपनों का प्रभाव साहित्य को भी प्रभावित करेगा। इस प्रकार साहित्य उस समुदाय विशेष का वर्णन तो करता ही है साथ ही सार्वजनीन समस्यायें, जो प्रत्येक वर्ग के लोगों से किसी न किसी रूप में जुड़ी हुई हैं, वह भी रचनात्मकता का हिस्सा हैं। समय के साथ–साथ साहित्य में विभिन्न विधाओं का जन्म हुआ कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि। चूँकि औपन्यासिक साहित्य का कलेवर

विस्तारपूर्ण होता है, जिसमें घटनाएँ लम्बी फैली होती हैं, ऐसे में इसका अध्ययन करके हम समय के साथ समाज, धर्म, संस्कृति एवं राजनीति में परिवर्तन को भी रेखांकित कर सकते हैं।

भारत एक ऐसा देश है, जहाँ अनेक संस्कृतियाँ तथा धर्म पनपे। जहाँ तक धर्म की बात है, तो धर्म ऐतिहासिक आवश्यकताओं के कारण उत्पन्न होता है। मध्यकाल में भारत अव्यवस्थाओं की जिस राह से गुजर रहा था, ऐसे में भारत में इस्लाम का प्रवेश एक महत्त्वपूर्ण घटना है। वास्तव में इस्लाम धर्म का उदय अरब देश में माना जाता है और जिस समय यह अस्तित्व में आया, पूरे अरब देश की शासन व्यवस्था बर्बर योद्धाओं एवं राजाओं के हाथ में थी। 570 ई. में हजरत मुहम्मद साहब का जन्म हुआ और उन्होंने आगे चलकर इस्लाम धर्म से लोगों को परिचित कराया। पवित्र इस्लामिक ग्रंथ 'कुरान शरीफ' में धार्मिक नियमों, आचरणों एवं शिक्षाओं का उल्लेख मिलता है। आगे चलकर इस्लाम के दो रूप देखने को मिले। प्रथम मुस्लिम शासकों द्वारा अपने हिसाब से चलाया गया इस्लाम धर्म और दूसरा सूफी संतों का इस्लाम धर्म जो मूलतः आत्मा का धर्म था, विश्वास का धर्म था। आमतौर पर मुस्लिमों का आगमन तीन ओर से माना जाता है। प्रथम व्यापारियों के रूप में दक्षिण भारत के तटीय क्षेत्रों में, दूसरा उमैय्या के शासन काल में और तृतीय रोमन, शक, हूणों की तरह मध्य एशिया के तुर्क और अफगानी मुसलमान सुसंगठित रूप में भारत आये। मुस्लिमों का प्रवेश भारत में आक्रमणकारियों के रूप में नहीं हुआ, इसके पक्ष में तर्क रखते हुये शकील हसन शमशीर कहते हैं, ''पैगम्बर हजरत मुहम्मद के एक सहाबी हजरत तीमारदारी ऐसे सर्वप्रथम मुसलमान थे जो पैगम्बर का संदेश लेकर भारत आए और इस्लाम का भारत में प्रचार किया।'' कहने का आशय यह है कि मुसलमान भारत में सर्वप्रथम इस्लाम प्रचारक के रूप में आये थे न कि आक्रमणकारी के रूप में। इस्लाम धर्म को मानने वाले ही मुस्लिम कहलाए। भारत में रहने वाले मुसलमान दो तरह के थे एक जो आरम्भ से ही इस्लाम को मानने वाले थे, वे 'मुसल्लीम' कहलाये और दूसरे जिन्होंने बाद में धर्म परिवर्तन के द्वारा इस्लाम को स्वीकारा, वह 'मोमीन' कहलाये। मध्यकाल में भी विदेशी मुसलमान (अरबी, ईरानी, तुर्क, मंगोल, हब्शी) और भारतीय मुसलमान (धर्मान्तरण के पश्चात्) समाज में मौजूद थे। मुस्लिम समाज में

सुन्नी, शिया, महदवी, चिश्ती, सोहरावर्दी, कादिरिया, तातारी, बोहरा तथा अन्य सम्प्रदायों एवं मतों को मानने वाले लोग भारत में निवास करते थे और इन सभी मतावलम्बियों के रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा, परम्पराएँ, सामाजिक व्यवहार तथा रीति रिवाजों में समानताएँ और असमानताएँ दोनों मौजूद थीं। मुस्लिम समाज, प्रदेश या देश के आधार पर ख़्वारिज़्मी, ख्वाकी, ख़ुरासानी, ईरानी, तूरानी, समरकन्दी, बुख़ारी, बंगाली, गुजराती, मुलतानी, सिंधी इत्यादि में बँटा हुआ था। मुस्लिम समाज को व्यवसायों ने भी कई वर्गों में विभक्त कर दिया। प्रथम शासक वर्ग, द्वितीय उलेमा वर्ग, तृतीय मध्यम वर्ग। मध्यकालीन भारत में शासन करने वाले मुस्लिम शासक वंशों में गुलाम वंश, गोरी वंश, सैयद वंश, लोदी वंश, मुगलवंश प्रमुख शासक वंश थे और इस समय सम्पूर्ण भारत पर मुस्लिमों का प्रभुत्व था। मुगल शासक अकबर ने हिंदू और मुस्लिम संस्कृति में एकात्मक समरसता लाने का प्रयत्न किया।

मध्यकालीन मुस्लिम समाज और संस्कृति का प्रभाव साहित्य में भी परिलक्षित होता है। हजरत मुहम्मद साहब की भाषा अरबी थी, उसी भाषा को इस्लामी भाषा का दर्जा दिया गया। कुरान, हदीस अन्य सभी अरबी भाषा से संबंध रखते हैं। यही अरबी भाषा मुस्लिम समाज और साहित्य की भाषा बनी। अलबरूनी ने 'तहकीक–ए–हिन्द', हसन निजामी ने 'ताजुल मासिर', मिनहाज–उस–सिराज की 'तबकात–ए–नासिरी, बरनी ने 'तारीख–ए–फिरोजशाही', बाबर ने 'तुज़ुके बाबरी' (तुर्की भाषा) जैसे साहित्यिक ग्रंथों की रचना इसी समय की। मध्यकालीन भाषा एवं संस्कृति का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर भी दिखाई पड़ता है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल में अमीर खुसरो, अब्दुर्रहीम खानखाना जैसे मुस्लिम हिन्दी भाषा के कवि हुए। इनकी कविताएँ भले ही अपभ्रंश में लिखी गई थी परन्तु भाव में ऐतिहासिकता झलक रही थी। मध्यकालीन (भक्तिकाल) सूफी काव्य परम्परा भारतीय और इस्लामिक संस्कृतियों के सम्मिलन का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती है एवं इस्लाम धर्म के गूढ़ पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है। इस्लामिक दर्शन एवं सिद्धान्तों में निबद्ध सूफी काव्य धारा एक विशिष्ट काव्यधारा है, जहाँ आत्मा, परमात्मा, बुद्धि, हृदय हर पक्ष पर चर्चा की गई है। सूफी संतों ने सभी धार्मिक तथा सामुदायिक भेदभावों से आगे बढ़कर मानव हित

को प्रोत्साहित किया। मलिक मुहम्मद जायसी का 'पद्मावत' इस साझा संस्कृति का श्रेष्ठतम ग्रंथ है। मध्यकालीन अन्य सूफी कवियों मंझन, कुतुबन, उस्मान का काव्य भी इस्लामिक दर्शन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मध्यकालीन भारत में धर्म निरपेक्ष काव्य का श्रेष्ठतम पक्ष हिन्दी की रीतिकालीन कविताएँ हैं। रसखान, मुबारक, आलमशेख की कविताओं में जो ताज़गी और निरालापन है, वह उनके पूर्वज कवियों में नहीं। आलम की कविताओं में जो विरह की टीस है, वह उनके समकालीन कवियों से थोड़ी अलग थी और इस नवीनता में इस्लाम की भावुकता का प्रभाव परिलक्षित होता है।

जहाँगीर, शाहजहाँ के समय तक अंग्रेज भारत में अपना आधिपत्य जमा चुके थे। अपनी स्वार्थपरकता, सत्तालोलुपता के चलते इन्होंने भारत देश की साझा संस्कृति को तोड़ने की चालें चलीं और इसमें कामयाब भी हुए। अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति को अपनाया। सन् 1905 में बंगाल विभाजन हुआ, जिससे हिन्दुओं और मुसलमानों में वैमनस्य बढ़ गया और गाँधी जैसे लोकनायक इस बात से वाकिफ थे। उन्होंने हिन्दू–मुस्लिमों में एकता स्थापित करने का पुरजोर प्रयत्न भी किया और अंग्रेजों की कुटिलता से वाकिफ हमारे साहित्यकारों ने भी अपनी लेखनी के द्वारा इसे अभिव्यक्त किया। भारतेन्दु युग से ही कहानी और उपन्यास की रचना आरम्भ हुई। राधा कृष्ण दास ने 'निःसहाय हिन्दू' नामक उपन्यास लिखकर सर्वप्रथम अब्दुल अजीज़ नामक मुस्लिम पात्र को उपन्यास में जगह दी। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि' व 'कर्मभूमि' में मुस्लिम समाज, संस्कृति और हिन्दू–मुस्लिम की मिली जुली संस्कृति का चित्रण किया है। प्रेमचन्द के अतिरिक्त विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक एवं उपेन्द्रनाथ अश्क जैसे साहित्यकारों के उपन्यासों में भी मुस्लिम जीवन व संस्कृति की झलक देखने को मिलती है।

सन् 1947 में भारत धर्म के आधार पर दो राष्ट्रों भारत–पाकिस्तान में विभाजित हो गया। विभाजन के पश्चात् यह स्थिति हुई कि कई मुसलमान पाकिस्तान जाकर बस गये और कई अपनी जन्मभूमि के मोह का परित्याग नहीं कर पाये और यहीं रह गये। इन मुसलमानों के प्रति हिन्दू समाज में जिस तरीके के नफरत के बीज बोए गये, वह मानवीयता को चुनौती देने वाले थे।

भारत–पाक विभाजन एक ऐसी त्रासदी बन गया, जहाँ से मुस्लिम समाज निकल नहीं पाया। उसके भीतर डर, आशंका, भय और तनाव की जो स्थिति पैदा हो चुकी थी, वह आज भी देखी जा सकती है। इस विभाजन ने पूरे कौम की राष्ट्रीयता को शक के घेरे में लाकर खड़ा कर दिया। अल्पसंख्यक समाज की पीड़ा का बयान करते हुये गुलशेर खाँ शानी ने कहा कि ''तुम अल्पसंख्यक होने की तकलीफ कभी नहीं समझ सकते, उनका डर, उनकी असुरक्षा, दहशत से एक–दूसरे से चिपके रहना शक और सन्देह की तेज रोशनी से घिरे रहने का आभास'' और यह पूर्णतः सत्य भी है। आज भी आतंकवाद के घेरे में सर्वप्रथम मुस्लिमों को ही केन्द्र में रखा जाता है जबकि भारत में रहने वाला हर मुस्लिम आतंकवादी नहीं कहा जा सकता है। भारत जैसे लोकतान्त्रिक देश में सभी नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित होनी चाहिए परन्तु वास्तविकता कुछ और ही है। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट (2006) में मुस्लिमों के समता, पहचान, सुरक्षा से सम्बन्धित मुद्दों को रखा गया। साथ ही शैक्षणिक व आर्थिक सेवाओं में उनकी पहुँच, जातीय, धार्मिक और प्रांतीय समीकरणों की बहस, मुस्लिम नारी की स्थिति इन सभी पर विस्तार से चर्चा की गई है। सच्चर कमेटी 2006 ने मुस्लिमों की स्थिति सुधारने हेतु पुराने आरक्षण के मुद्दे को बहाल करने का सुझाव दिया परन्तु पिछले आरक्षण की झूठी तसल्ली से दलितों और आदिवासियों में कितना सुधार हुआ, यह देखा ही गया है। जब तक सम्पूर्ण मुस्लिम समाज एकजुट होकर क्रान्तिकारी संघर्ष नही करेगा तब तक उसकी दशा और दिशा में कुछ सुधार नहीं हो पायेगा।

स्वतंत्रता पूर्व तक तो मुस्लिम जीवन यथार्थ को लेकर उपन्यास क्षेत्र में इतना चित्रण नहीं हुआ परन्तु भारत–पाक विभाजन की घटना का साहित्य पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। देश विभाजन के पश्चात् मुस्लिम समाज, मुस्लिम जीवन तथा अल्पसंख्यक के नाम पर की जाने वाली राजनीति का प्रभाव औपन्यासिक फलक पर विस्तार के साथ हुआ है। मुस्लिम जीवन यथार्थ के विभिन्न पक्षों सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक यथार्थ की झलक उपन्यासों में देखने को मिलती है। मुस्लिम सामाजिक जीवन के यथार्थ का चित्रण राही मासूम रज़ा के 'आधा गाँव', गुलशेर खाँ शानी के 'काला जल', बदीउज़्मा के 'छाको की वापसी'

उपन्यास में देखने को मिलता है। मेहरून्निज़ा परवेज़ का 'कोरजा' , असगर वज़ाहत का 'सात आसमान', शानी का 'काला जल', अब्दुल बिस्मिल्लाह का 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया', बदीउज़्मा का 'छाको की वापसी' उपन्यास में मुसलिमों के आर्थिक जीवन का यथार्थ का वर्णन प्राप्त होता है। राजनीतिक यथार्थ से सम्बन्धित उपन्यासों में 'आधा गाँव', 'आखिरी कलाम' और 'कितने पाकिस्तान' उल्लेखनीय हैं। धार्मिक तथा सामाजिक यथार्थ का वर्णन नासिरा शर्मा के 'जिंदा मुहावरे', 'अक्षयवट', अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'झीनी–झीनी–बीनी चदरिया', मंजूर एहतेशाम के 'सूखा बरगद', बदीउज़्मा के 'छाको की वापसी' में प्राप्त होता है। स्त्री पुरुष सम्बन्धों की दृष्टि से 'कोरजा' उपन्यास महत्वपूर्ण है। मुस्लिम स्त्री की समस्याओं का वर्णन भगवान दास मोरवाल के 'हलाला', जयश्री रॉय के 'दर्दज़ा', नरेश चौधरी के 'एक सवाल तीन तलाक' में देखने को मिलता है।

सन् 1947 के पश्चात् लिखे गये उपन्यास साहित्य में यशपाल का 'झूठा सच' 'वतन और देश' तथा 'देश का भविष्य' नाम से दो भागों में प्रकाशित हुआ। प्रथम खण्ड में सन् 1942 से सन् 1947 तक का कालखंड विस्तृत है, जिसमें साम्प्रदायिकता को बढ़ाने वाली शक्ति का जिक्र किया गया है और दूसरे खण्ड में सन् 1947 से सन् 1957 तक के बाद का चित्रण है। देश विभाजन के पश्चात् समस्याओं का आरम्भ यहीं से दिखाई देता है। गुलशेर खाँ शानी का 'काला जल' उपन्यास मुस्लिम समुदाय के जीवन का प्रामाणिक और कई मायनों में महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें पहली बार उपन्यास साहित्य में मुसलमानों को विस्तृत फलक पर रखा गया है। शानी का मानना था कि बहुसंख्यक वर्ग को अपनी तुच्छ और हीन मानसिकता का त्याग करना पड़ेगा तभी वह अल्पसंख्यकों की दशा को समझ सकेंगे। राही मासूम रज़ा का 'आधा गाँव' उपन्यास मुस्लिम समाज, संस्कृति और मुस्लिम मनःस्थिति का यथार्थ प्रस्तुत करता है। राही मासूम रज़ा ने मुसलमानों को लेकर उठाये जाने वाले सवालों पर भी लोगों की प्रतिक्रिया को निकट से देखा है। उन्होंने अपने उपन्यास 'टोपी शुक्ला' में इसी बात को सूक्ष्मता से उल्लिखित किया है। इन्होंने अपने उपन्यास 'हिम्मती जौनपुरी' में भी मुस्लिम जीवन यथार्थ को दिखाने का पुरजोर प्रयास

किया है। बदीउज़्मा के उपन्यास 'छाको की वापसी' में बिहार में बसने वाले मुस्लिम समुदाय के दर्द, पीड़ा एवं संत्रास का अंकन किया गया है। गाँधी भाई तथा हबीब भाई जैसे इस उपन्यास के पात्र देश की दो विपरीत धाराओं भारतीय राष्ट्रवाद और इस्लामी राष्ट्रवाद में आस्था रखते हैं। मंजूर एहतेशाम के उपन्यास 'सूखा बरगद' में सुहेल नाम पात्र को केन्द्र में रखकर मुसलमानों के धर्म, भाषा और क्षेत्रीयता जैसे मुद्दे पर चर्चा की गई है। अब्दुल बिस्मिल्लाह का उपन्यास 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' में मुस्लिम श्रमिक समाज का विस्तृत वर्णन किया गया है जो मुस्लिमों की आर्थिक स्थिति को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। समाज की रूढ़िवादी और आस्थावादी परम्पराओं की ओर भी अब्दुल बिस्मिल्लाह ने ध्यान आकर्षित कराया है। मंजूर एहतेशाम ने अपने उपन्यास 'दास्तान–ए–लापता' में लोगों के धर्म और आस्था के ऊपर से उठते विश्वास को दिखाया है। दूधनाथ सिंह के उपन्यास 'आखिरी कलाम' की कथावस्तु मूलतः बाबरी मस्जिद विध्वंस पर आधारित है। इस उपन्यास में धार्मिक भेदभाव का बखूबी चित्रण किया गया है। अयोध्या में रहने वाले मुसलमानों की न केवल मस्जिद गिराई गई थी बल्कि उन्हें बेघर भी कर दिया गया था। कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास भी भारत–पाक विभाजन के पश्चात् हिन्दू–मुस्लिम सम्बन्धों को समझाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण उपन्यास है। भीष्म साहनी के 'तमस' उपन्यास में हिन्दू मुस्लिम सम्बंध को साम्प्रदायिकता का भीषण वर्णन किया गया है। अपने ही घर से बेघर होने की इस विडम्बना का चित्रण नासिरा शर्मा ने 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में किया है। अनवर सुहैल 'सलीमा' उपन्यास के माध्यम से मुसलमान समाज तथा मुस्लिम स्त्री के प्रति समाज के लोगों की मानसिकता को उजागर किया है। इसी प्रकार 'पहचान' उपन्यास में मुस्लिम समाज के शिक्षा और तकनीक के माध्यम से आगे बढ़ने की बात कही गई है।

इस विवेचन के पश्चात् हम कह सकते हैं कि भारत एक ऐसा देश है जहाँ अनेक संस्कृतियाँ पनपी हैं। मुस्लिमों के भारत आगमन से भारत के हर क्षेत्र में बदलाव दृष्टिगोचर हुआ। मुस्लिम अपनी कला एवं संस्कृति को यहाँ ले आये और यहाँ की कला एवं संस्कृति से जोड़कर एक नये सांस्कृतिक रूप को जन्म दिया, जिसने साहित्य को भी प्रभावित किया। स्वातन्त्र्योत्तर

हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिम जीवन, संस्कृति, मुस्लिम जातिय व्यवस्था विचार, धार्मिक एकता, साम्प्रदायिकता, नारी प्रश्न जैसे विषयों पर बेबाकी से बात रखी गई है।

शोध विषय से सम्बन्धित अन्य शोध कार्य –

विविध विश्वविद्यालयों में अनेक शोधकर्ताओं ने मुस्लिम जीवन के अनेक पहलुओं पर शोध किये हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार से हैं–

1 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में प्रतिबिंबित मुस्लिम स्त्री जीवन : डॉ. शाहीन पटेल (कोल्हापुर विश्वविद्यालय, 2003)

2 हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिम आर्थिक जीवन : शाहीन एज़ाज जमादार, (कोल्हापुर विश्वविद्यालय, 2013)

3 हिन्दी के मुस्लिम उपन्यासकारों के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन : गौरव तिवारी, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 2014)

उपर्युक्त शोध प्रबन्धों में मुस्लिम स्त्री जीवन, मुस्लिम आर्थिक जीवन, मुस्लिम उपन्यासकारों के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन विषयों पर शोध किया गया है परन्तु शोधकर्त्री द्वारा चयनित विषय **हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिम जीवन का यथार्थ (सन् 1947 से अब तक)** में मुस्लिम जीवन यथार्थ को समग्र दृष्टि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं भाषिक दृष्टि से देखने का प्रयास किया जायेगा। शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तावित शोध विषय सर्वथा मौलिक एवं नवीन है।

शोध विषय की आवश्यकता एवं महत्त्व –

प्रस्तावित शोध विषय मुस्लिम समाज, मुस्लिम जीवन, मुस्लिम संस्कृति एवं धर्म दर्शन के यथार्थ स्वरूप को केन्द्र में रखकर मुस्लिम समाज की पृष्ठभूमि पर लिखे गये उपन्यासों के विस्तृत अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। देश विभाजन के पश्चात् भारत में रह रहे मुस्लिम समाज में किस तरह का बदलाव आया है, अपनी अस्मिता, सुरक्षा को लेकर उनकी कैसी मनःस्थिति है हमारे रचनाकार इसको समझने में किस हद तक सफल हो पाये हैं, इस दृष्टि से इस शोध का अपना

विशिष्ट महत्त्व होगा। एक और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस्लाम धर्म, उसकी मान्यतायें एवं संस्कृति से हिन्दी साहित्य किस प्रकार से प्रभावित हुआ इस विषय को समझाना भी शोध विषय की आवश्यकता रहेगी।

शोध विषय का उद्देश्य –

प्रस्तावित शोध का मुख्य उद्देश्य हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त मुस्लिम जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक यथार्थ का गहन अध्ययन करना होगा।

शोध कार्य की प्रविधि –

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु शोधकर्त्री द्वारा स्वतंत्रता के पश्चात् लिखे गये मुस्लिम जीवनपरक उपन्यासों का विस्तृत अध्ययन, अनुशीलन किया जायेगा। साथ ही वर्णनात्मक, विवरणात्मक एवं विवेचनात्मक पद्धति का उपयोग करते हुये विषय की पड़ताल की जायेगी। मुस्लिम समुदाय के लोगों एवं साहित्यकारों से साक्षात्कार लिया जायेगा, जिससे मुस्लिम जीवन के यथार्थ को और अधिक स्पष्ट किया जा सके।

हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिम जीवन का यथार्थ
(सन् 1947 से अब तक)

प्रथम अध्याय – भारत में मुस्लिम जीवन एवं हिन्दी साहित्य : पृष्ठभूमि

(1.1) भारत में इस्लाम का आगमन, मध्यकालीन मुस्लिम जीवन एवं साहित्य

(1.2) आधुनिक काल में मुस्लिम जीवन एवं साहित्य

(1.3) भारत पाक विभाजन का मुस्लिम जीवन एवं साहित्य पर प्रभाव

द्वितीय अध्याय – स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिम जीवन का सामाजिक एवं आर्थिक यथार्थ

सामाजिक यथार्थ

(2.1) मुस्लिम सामाजिक संरचना

(2.2) मुस्लिम नारी की स्थिति

(2.3) जाति व्यवस्था, पसमांदा मुस्लिम जीवन

(2.4) सामाजिक समस्याएँ–अशिक्षा, रूढ़िवादिता, भाषा, जनसंख्या वृद्धि, लिंग विभेदीकरण

(2.5) रूढ़ियों एवं नवीन मूल्यों का द्वन्द्व

(2.6) हिन्दू–मुस्लिम सम्बन्ध

आर्थिक यथार्थ

(2.7) रोजगार की स्थिति

(2.8) आर्थिक संघर्ष

(2.9) बेरोजगारी, निर्धनता

तृतीय अध्याय – स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिम जीवन का राजनीतिक यथार्थ

(3.1) विभाजन की त्रासदी

(3.2) अल्पसंख्यकों के नाम पर की जाने वाली राजनीति

(3.3) सत्ता लोलुपता

(3.4) आतंकवाद

(3.5) बाबरी–मस्जिद विध्वंस

(3.6) साम्प्रदायिक दंगे

चतुर्थ अध्याय – स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिम जीवन का धार्मिक एवं सांस्कृतिक यथार्थ

धार्मिक यथार्थ

(4.1) धार्मिक विश्वास

(4.2) दर्शन, नीतियाँ

(4.3) मुस्लिम उपासना पद्धति

(4.4) धार्मिक कट्टरता

(4.5) धार्मिक अंधविश्वास

सांस्कृतिक यथार्थ

(4.6) लोकजीवन

(4.7) आचार–विचार

(4.8) रहन–सहन

(4.9) खान–पान

(4.10) त्यौहार

पंचम अध्याय–स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिम जीवन का मनोवैज्ञानिक यथार्थ

(5.1) रूढ़ियों और नवीन मूल्यों का द्वन्द्व

(5.2) पहचान, सुरक्षा, समानता का संकट

(5.3) भय, संत्रास, तनाव एवं कुंठा

षष्ठ अध्याय–मुस्लिम जीवन यथार्थ से सम्बन्धित स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों का शिल्प पक्ष

(6.1) भाषा शैली

(6.2) संवाद योजना

(6.3) बिंब योजना

(6.4) प्रतीक योजना

(6.5) मिथकों का प्रयोग

उपसंहार

परिशिष्ट

1 साक्षात्कार

2 आधार ग्रंथ

3 समीक्षात्मक हिन्दी ग्रंथ

4 समीक्षात्मक अंग्रेजी ग्रंथ

5 शब्दकोश / विश्वकोश

6 पत्र–पत्रिकाएँ

नोट– शोध निर्देशक के सुझाव से अध्याय एवं शोधकार्य में 20 प्रतिशत परिवर्तन संभव है।

आधार ग्रंथ

क्र.सं.	उपन्यास का नाम	उपन्यासकार	प्रकाशन	संस्करण
1	अपवित्र आख्यान	अब्दुल बिस्मिल्लाह	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2012
2	अलग–अलग वैतरणी	शिव प्रसाद सिंह	लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज	2004
3	अक्षयवट	नासिरा शर्मा	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली	2003
4	आखिरी कलाम	दूधनाथ सिंह	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
5	आधा गाँव	राही मासूम रज़ा	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2017
6	एक सवाल तीन तलाक	नरेश चौधरी	अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली	2019
7	काला जल	गुलशेर खाँ शानी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2007
8	कितने पाकिस्तान	कमलेश्वर	राजपाल पब्लिशिंग, नई दिल्ली	2002
9	कैसे लगायी आग	असगर वज़ाहत	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2008
10	कोरज़ा	मेहरून्निसा परवेज़	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2011
11	छाको की वापसी	बदीउज़्मा	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2008
12	जिंदा मुहावरें	नासिरा शर्मा	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2016
13	झीनी–झीनी बीनी चदरिया	अब्दुल बिस्मिल्लाह	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2018
14	झूठा सच	यशपाल	लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज	2010
15	टोपी शुक्ला	राही मासूम रज़ा	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2007
16	तमस	भीष्म साहनी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2018
17	दर्दजा	जयश्री राय	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2016
18	दास्तान–ए–लापता	मंजूर एहतेशाम	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2010
19	पहचान	अनवर सुहैल	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2009
20	सलीमा	अनवर सुहैल	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2014
21	सभा पर्व	बदीउज़्मा	शब्दकार प्रकाशन, नई दिल्ली	1994

22	सूखा बरगद	मंजूर एहतेशाम	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2016
23	हलाला	भगवानदास मोरवाल	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2016
24	हिम्मती जौनपुरी	राही मासूम रज़ा	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	1997

सहायक ग्रन्थ सूची

क्र.सं.	ग्रन्थ का नाम	लेखक	प्रकाशन	संस्करण
1	देश और मुसलमान	सुनील यादव	ज्ञान सम्पदा प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली	2018
2	देश विभाजन और नारी की त्रासदी	डॉ0 लखबीर कौर वर्मा	विकास प्रकाशन, कानपुर	2013
3	देश विभाजन के परिप्रेक्ष्य में आधा गाँव	शिवशेट्टे गोविन्द	पराग प्रकाशन, कानपुर	2012
4	धर्म के आइने में मुस्लिम स्त्री	शगुफ्ता नियाज़	अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर	2017
5	भारतीय मुसलमान मिथक, इतिहास और यथार्थ	सुनील यादव	अनन्या प्रकाशन, दिल्ली	2019
6	मुस्लिम उपन्यासकार परिवेश और उपन्यास	गौरव तिवारी	वाङ्मय बुक्स, अलीगढ़	2016
7	मुस्लिम विमर्श : साहित्य के आइने में	डॉ0 एम. फीरोज़ खान	वाङ्मय बुक्स, अलीगढ़	2012
8	राज्य और अल्पसंख्यक	भीमराव अम्बेडकर	गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली	2013
9	स्वाधीनता संग्राम में मुस्लिम भागीदारी	डॉ0 पृथ्वी राज कालिया, कामता प्रसाद	गार्गी प्रकाशन, दिल्ली	2016
10	संस्कृति के चार अध्याय	रामधारी सिंह दिनकर	लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज	2019
11	हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिम आर्थिक जीवन	डॉ0 शाहीन एज़ाज जमादार	ए.बी.एस. पब्लिकेशन, सारनाथ, वाराणसी	2014

पत्र–पत्रिकाएँ

क्र.सं.	पत्रिका का नाम	संपादक	प्रकाशन
1	हंस	राजेन्द्र यादव	दिल्ली
2	वाक्	सुधीश पचौरी	दिल्ली
3	वागर्थ	प्रभाकर श्रोत्रिय	कलकत्ता